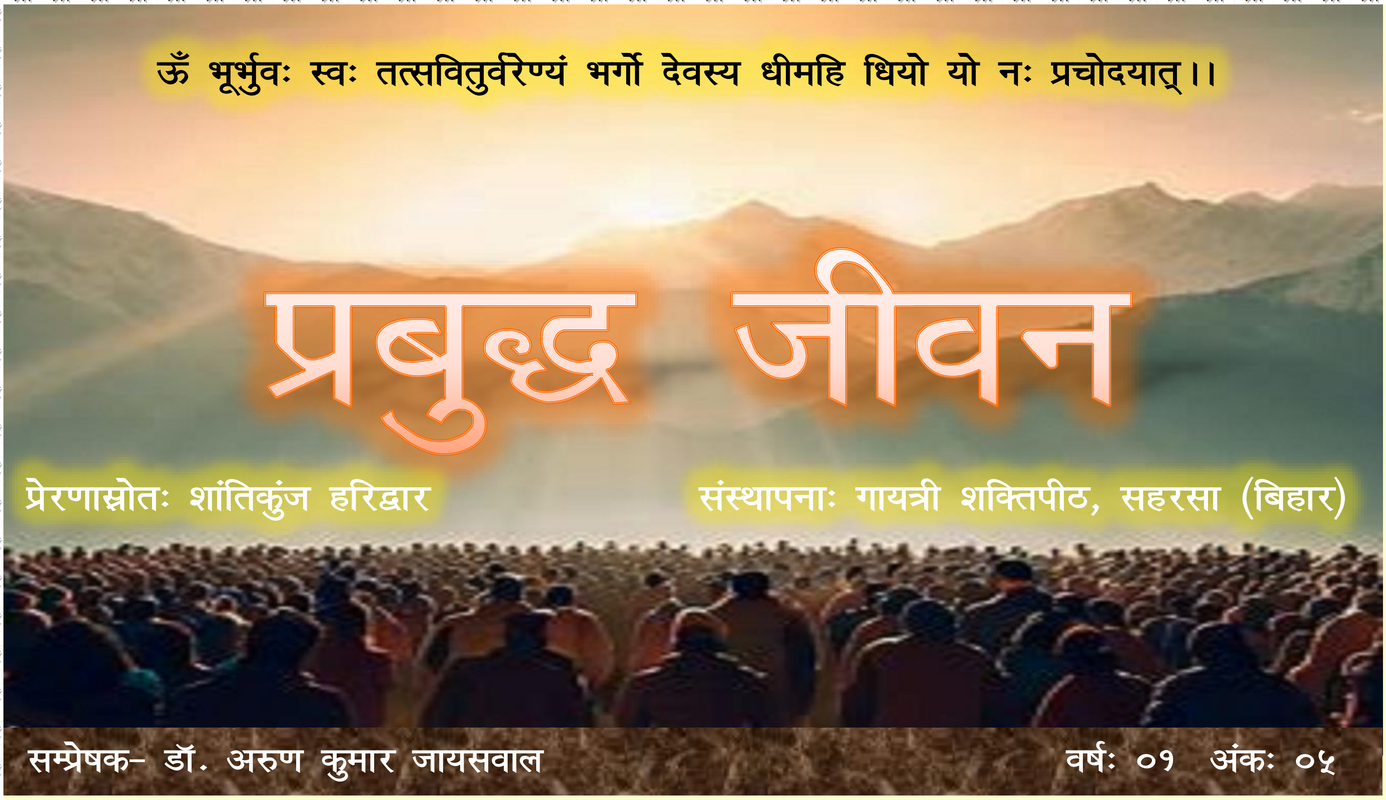

'स्वः'

'स्वः' स्वर्ग है। देवों का अनुग्रह व आशीष है। इसी में जीवन में देवत्व के उदय एवं स्वर्गीय सुखों के अवतरण के सभी रहस्य हैं। सुखों के सभी रूप-स्वरूप, सफलता-समृद्धि, सम्पन्नता के सभी आयाम यहीं सिमटे और समाए हैं। जो 'स्वः' को जान लेता है, समझ लेता है, वह अनायास इन सभी को पा लेता है।

स्वः की अनुभूति मन की पवित्रता-प्रसन्नता-निर्मलता-एकाग्रता में है। मन की शुद्धि में स्वः की सिद्धि है। गायत्री मंत्र की यह तीसरी व्याहृति विचारों के परिमार्जन-परिष्कार का सन्देश देती है। विचारों का परिष्कार, संस्कारों का परिष्कार, चित्त का परिष्कार- स्वः की समग्र अनुभूति के यही तीन चरण हैं। इन्हें गायत्री साधना के त्रिरत्न कहें या त्रिआयाम अथवा फिर उपासना-साधना-आराधना के तीन सूत्र- इन सभी का अर्थ 'चित्तशुद्धि' है।

'सुवरित्यसौ लोकः'- स्वः यह प्रसिद्ध स्वर्गलोक है- यह तैत्तिरीय उपनिषद् का वचन है। 'सुवरित्यादित्यः'- स्वः यह आदित्य है। सूर्य की ज्योति से ज्योतिर्मान है, स्वः की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति है। जो शुद्धि में सिद्धि को समझ लेते हैं, वे 'स्वः' की महिमा जान लेते हैं। कर्म हों या विचार अथवा भाव, देह हो या मन, प्राण-प्राक्षालन जीवन के प्रत्येक आयाम का होना चाहिए। ऐसा हो तो, स्वः की सभी विभूतियाँ-अनुभूतियाँ बन जाती हैं। फिर गायत्री मंत्र के अमृत, पारस, कल्पवृक्ष, कामधेनु होने की बात गायत्री साधक के जीवन में सत्यसिद्ध होने लगती हैं।

हृदय से हृदय तक

हृदय को अपने प्रकाश से ज्योतिर्मय बनाती दीपावली के दीपों की अवली चहुँओर, सबओर सजी दीयों की कतारें छठ मैया के स्वागत समारोह का उद्घोष करने में लगी हैं। दीपावली की सज-धज, उत्सव-उल्लास की धूम, लक्ष्मी मैया के पूजन के साथ माता काली का पूजन, बुद्धिप्रदाता गौरीनन्दन गणेश का अर्चन-अभिवन्दन- सबका सब इसी सत्य की सूचना है कि छठी मैया के आगमन में अब अधिक देर नहीं बची है। हमारे अपने भारत देश की संस्कृति है ही कुछ अनोखी-अनूठी, जिसके कण-कण में, क्षण-क्षण में संवेदना का सिंचन है, पवित्रता का प्रकाश है। समृद्धि में संजोये संस्कार हैं। दीपावली के साथ छठ पूजा का संयोग कुछ ऐसा ही है। समृद्धि की देवी माता लक्ष्मी के साथ-छठ मैया के पूजन का सुयोग-सुखद संयोग इस बात का साक्षी है कि समृद्धि-सम्पन्नता के अर्जन के साथ जीवन को पावन बनाने वाला तप अनिवार्य है। तप के व्रतबन्ध समृद्धि को अनुशासित करने के लिए तटबन्ध बनते हैं।

दीपावली का उल्लास हो अथवा छठ मैया का अर्चन-वन्दन, दोनों ही स्थानों-आयामों में नारी की महिमा निखरती है। दीपावली में वही गृहलक्ष्मी का साज-श्रृंगार करके माता लक्ष्मी का पूजन करके परिवार के लिए समृद्धि का वरदान मांगती और पाती है। वही नारी छठ मैया के अनुष्ठान पूजन में तीन दिनों का कठोर तप करके अपने और अपनों के समस्त सन्तापों का शमन करती है। समृद्धि का श्रृंगार हो अथवा तपपरायणता के संस्कार, दोनों ही स्थानों पर भारत देश की नारी सर्वथा अग्रणी व अग्रगामी रहती है।

इतिहार के चिर-पुरातन काल से, मानवता के महानायक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम के अयोध्या वापस होने के महोत्सव के रूप में दीपावली के मनाने का चलन है। यह असुरता पर मानवता की विजय का महोत्सव है। कुछ इसी तरह की कथा छठ मैया की भी है। ऐतिहासिक रूप से मुंगेर सीता मनपत्थर (सीताचरण) सीताचरण मन्दिर के लिए जाना जाता है, जो मुंगेर में गंगा के बीच में स्थित है। ऐसा माना जाता है कि माता सीता ने मुंगेर में छठ पर्व मनाया था। इसके बाद ही छठ महापर्व की शुरुआत हुई। यह सूर्य उपासना का लोकपर्व है। वही सूर्य उपासना जिसके गीत गायत्री मंत्र में गाए जाते हैं। जिसकी महिमा ऋग्वेद से लेकर रामायण-महाभारत एवं अन्य पुराणों में कही गयी है।

छठ पर्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो दीपावली के बाद षष्ठी तिथि को एक विशेष खगोलीय परिवर्तन होता है। इस समय सूर्य की पराबैंगनी किरणें पृथ्वी की सतह पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती हैं। छठ पूजा के तप से इसके सम्भावित कुप्रभावों से मानव जीवन की यथासम्भव रक्षा करने की सामर्थ्य प्राप्त होती है। छठ जैसी खगोलीय स्थिति में (चन्द्रमा व पृथ्वी के भ्रमण तलों की सम रेखा के दोनों छोरों पर) सूर्य की पराबैंगनी किरणें कुछ चन्द्र सतह से परावर्तित तथा कुछ गोलीय अपवर्तित होती हुई, पृथ्वी पर पुनः सामान्य से अधिक पहुँच जाती है। वायुमण्डल के स्तरों से आवर्तित होती हुई, सूर्यास्त तथा सूर्योदय के समय यह और भी सघन हो जाती हैं। ज्योतिषीय गणना के अनुसार- यह घटना कार्तिक मास की अमावस्या के छः दिन बाद आती है। छठ पूजन एवं व्रत से इसका सम्यक् निवारण-निराकरण होता है।

छठ पर्व का त्रिदिवसीय तप जिसमें प्रथम दिन का नहाय-खाय, दूसरे दिन का खरना-लोंहडा, तीसरे दिन का सन्ध्याअर्घ का तप सभी के लिए परम फलदायी व सुखदायी है। दीपावली की मिठाई-छठपूजन का ठेकुआ आप सबके साथ हमारे जीवन में सुख-समृद्धि व शान्ति-सौमनस्य की मिठास घोले, लक्ष्मी मैया व छठ मैया से यही प्रार्थना है।

– अरुण कुमार जायसवाल

HONESTY

Honesty is one of the highest traits that makes a major marking in a human being's spotless and flawless character. Honesty is man's gift to his own species. It cannot be a policy because honesty is not transactional. It is not about mere profits and losses. It must embrace the very quality of what defines people as people. It must exist like the soul has a subsisting place inside the body. The residing deity in each human being must be honesty.

Great men who have created huge tectonic shifts in human consciousness have all been extremely honest integrally. It would have been impossible for them to create the life altering thinking processes if the very fundamental base was not honesty. It must have been a way of life and therefore, these characteristics made them immortal.

Honesty is internally embedded in a human being's 'sanskars'. Sanskar goes beyond the simple apprehension and assimilation of the words culture and manners. Sanskaras is the sum total of the holistic karmic good that accumulates and manifests itself in the current person's life as both humane and divine qualities. Many may cultivate it too, later in life if they have been corrupt but somewhere their good karma somewhere arrives to make them visit the idea of a honest life. And it is nothing but pure good fortune that some people realize their past fraudulent actions and decide to turn a new leaf. Honesty is the leading of a truthful and transparent life. There are no webs, no entanglements, and no murky incidents to hide in the closet. Every action is committed with full consciousness.

To be honest also means to be very acutely aware between need and greed. So, desires are also kept in check and a person unknowingly and very beautifully conducts the affairs of life. There is no room for pretension and display. One is outside what one is inside and therein lies the real beauty. Honest people are very light and carry no burdens. They can afford to do so because every action of theirs is audited by themselves so there is no carry forward. Honest people don't hide their deeds.

How does one inherit honesty? Like Gratitude, Faith, Hope and Humility- honesty also is innate by nature. But if it isn't there while one is born and then while growing up-if the realization then comes by observation- like mentioned earlier, it can be acquired. Only and only if one receives inspiration and knowledge of righteousness at the right moment. Again, it is the result of good karmic fate only.

For example, there are many reformed criminals and thieves. They lead a dishonest life and untruthful because of their poor upbringing or circumstantial situations. But once they become aware of what it truly means to be a good human being - they chose the path of honesty, and it is for keeps. They understand that honesty is the first step to liberation. It is a beautiful thing to be honest in this temporary trajectory. They do not want to go back to their dark past and remain devout to the new paths they have chosen to tread on. And the first chapter of this journey begins with being honest. To oneself, to God and mankind.

' No legacy is as rich as honesty' writes William Shakespeare and it is the thing that we can leave behind as the most precious deepening bond between a person and another. Honesty deepens faith and where faith is- relationships blossom making societies and nations bloom in full glory.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

आत्म-प्रदीप की जागृति संभव, परन्तु -----

आत्मा क्या है हम सबके जीवन का प्रदीप है । पर इस प्रदीप को हमारे ही जन्म-जन्मान्तर्गत संस्कारों के मल, विक्षेप और आवरण ने ढँक रखा है । यह सूर्य है, परम प्रकाशित है, अखण्ड ज्योति बनकर हमारे ही हृदय रूपी घर में वास करती है पर अफसोस! 'कस्तूरी मृग कुंडली बसे, मृग ढूँढे वन मांहि' की तरह इस संसार कानन में भटक-भटककर हम मर जाते हैं पर अपनी ही आत्मा के दर्शन नहीं कर पाते हैं । क्यों ? क्योंकि हमें अपनी ही आत्मा पर पूर्ण विश्वास नहीं है, क्योंकि आस्तिक्ता-नास्तिकता के महाभँवर ने हम सबको घेर रखा है । भक्ति-ज्ञान और कर्म की त्रवेणी के संगम में हमारा मन स्नान नहीं करता है । हमारे अन्दर नाचिकेत जिज्ञासा का अभाव है, हमारे अन्दर आरूणि जैसी गुरुभक्ति नहीं है । हमारे अन्दर 'योगः कर्मसु कौशलम्' की भावना विकसित नहीं है ।

यह सही है कि इस आत्मा के ज्ञान के लिए कोई कर्म, कोई योग, कोई यज्ञ आदि आवश्यक नहीं है । लेकिन ये आवश्यक इसलिए हैं कि ये आत्मदर्शन के लिए हमारी मनोभूमि बनाते हैं । ये मनोभूमि को जोतने का काम करते हैं । हमारे मन की कामनाओं-वासनाओं के खर-पतवार को साफ करते हैं । हमारे मन के आँगन को पवित्र बनाते हैं । जबतक मन की भूमि पवित्र नहीं होगी, वह गंगा की तरह निर्मल नहीं होगी तबतक उसमें अपनी ही आत्मा के दर्शन कैसे होंगे । कहते हैं मन चंगा तो कठौती में गंगा । अब मन ही चंगा नहीं है, मन ही साफ-सुथरा नहीं है तो आत्म-दर्शन तो असम्भव ही है इसलिए ये सार उपाय हैं आत्मा के द्वार तक पहुँचने के । जैसे वैष्णो माता के दरबार तक पहुँचने के लिए हर कोई अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार सवारी लेता है या पैदल जाता है पर दर्शन वही कर पाता है जिसे माता स्वयं बुलाती हैं इसलिए सुप्रसिद्ध पंक्ति है कि 'चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है' । तो हम सब की मनोभूमि हमारे विश्वास के अनुसार माता बनाती हैं जिन्हें हम अपने-अपने हृदय में बैठी आत्मा भी कह सकते हैं । तो उपनिषद् कहती है कि यह आत्मा जिसे वरण करती है उसी के सामने यह अपने स्वरूप को प्रकट करती है –

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्य तस्यैवायंमात्मा विवृणुते तनुं स्वाम् ।।

अर्थात्, यह आत्मा न प्रवचन से, न प्रतिभा से, न बहुत अधिक सुनने से प्राप्त होती है, यह तो जिसे वरण करती है बस उसी के आगे अपने स्वरूप को उजागर करती है । अर्थात् हम कितनी भी दूर से जाएँ, कितनी भी उत्सुकती पूर्वक जाएँ जबतक हृदय कक्ष के अन्दर बैठी आत्मा न चाहे हमसे मिलना वह उठकर हमारे लिए द्वार नहीं खोलेगी । इसलिए उसे मनाना पड़ता है । उसे मनाने की प्रक्रिया है ये यज्ञादि कर्म, हमारी निश्छल और निष्काम भक्ति, सेवा, परोपकार, प्रेम, करुणा आदि सद्गुण जिससे हमारी ही आत्मा हमारे मन के आगे अपने द्वार खोल सके और हमें अपने अन्दर प्रवेश करने दे ।

वस्तुतः, यह सारा संसार आत्मा का ही संसार है । पर हम माया-मोहवश बाहर के संसार में तो भ्रमण करते रह जाते हैं, रिश्ते-नातों में डूबते-उतराते रह जाते हैं पर अपनी ही आत्मा के संसार में विचरण नहीं कर पाते । अपनी ही महान आत्मा का महान सौन्दर्य नहीं देख पाते । अपने शरीर को सजाते रह जाते हैं पर मन की सजावट के अभाव में आत्मा से दूर रह जाते हैं । हम संसार का अन्तहीन, जन्म-जन्मान्तरयुक्त लम्बा रास्ता तो तय करते हैं पर अपने ही अन्दर वैठी आत्मा को जानने की कोशिश नहीं करते हैं और जबतक अपनी आत्मा का बोध नहीं तबतक हम अधूरे ही तो हैं । अधूरेपन में क्या कभी, किसी को भी, किसी भी क्षण आनन्द आया है । आनन्दबोध पाना है तो सच्चिदानन्द परब्रह्म परमेश्वर की धुनि तो रमानी होगी । परमेश्वर की भूखी प्यासी इस आत्मा को उनके पास बिठाना तो होगा, उनके पास बिठाने के लिए इस मन को पार्वतीवत् तपस्या करके पवित्र तो बनाना होगा तभी तो परमात्मा अपनी चिर समाधि भंगकर हमारे पास आएँगे । नहीं तो, पूर्ण परमात्मा को हमारी क्या जरूरत ? हमें जरूरत है परमात्मा की, अपनी आत्मा को जानने और समझने के लिए उनके सहयोग की, फिर देर किस बात की, उठिए, जगिए और बड़ों के बताए राह पर चलकर ज्ञान को प्राप्त करिए –

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिंदु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **बासंती रंग त्याग और तितिक्षा का रंग है। अच्छे उद्देश्य के लिए कष्ट सहना यानी त्याग और बलिदान का प्रतीक है बासंती रंग।**
- **ज्यादा ज्ञान की बातें करना अज्ञानियों की दुनिया में खतरनाक होता है। अंधों की दुनिया में आंख की बातें नहीं करनी चाहिए।**
- **हमारे अंदर मूल भावना एक ही है, उसकी अभिव्यक्ति अलग-अलग रूप में होती है। उस अभिव्यक्ति के कई पहलू हैं, कुछ पहलू हमारे अंदर है, कुछ पहलू बाहर हैं। बायोलॉजिकल, इमोशनल, साइकोलॉजिकल अनुभव शरीरगत है ।नर्वस सिस्टम और हार्मोनल सिस्टम को मिलकर बना है न्यूरो ह्यूमरल यह हमारे शरीर का बहुत बारीक और रहस्यमयी हिस्सा है।**
- **एहसास फीलिंग अनेक प्रकार के हैं, अलग-अलग एहसास हैं, किंतु केंद्र एक ही है 'प्रेम'।**
- **हृदय से उफनती संवेदना सबसे पहले अपनी मां को खोजती है। मां के आंचल की छांव को तलाशती है। क्योंकि माँ से ही जन्म है और जीवन भी। संवेदनाओं की समूची संजीवनी शक्ति हमें माँ के ही कोख से मिलती है।**
- **मां प्रथम गुरु होती है, मां के परिचय से ही संसार में हम परिचित होते हैं। माँ नहीं होती तो हमारा अस्तित्व भी नहीं होता ।मेरी मां या आपकी मां फिर इन माताओं की मां यह क्रम इसकी अनंत कड़ियां हैं ।कोई तो है जो सबकी मां है। कौन है? जिसका स्मरण सचमुच कहिए तो हमें विस्मरण हो गया। उस विस्मरण को स्मरण में बदलने, उस संवेदना के सूत्रों को मजबूत करने ही यह नवरात्रि पर्व आता है।**
- **पूरे गायत्री मंत्र का सार है बुद्धि की शुद्धि।**
- **बुद्धि वो जिसको हम परिमार्जित करें, साफ करें, शुद्ध करें निरंतर।**
- **सूर्य सबको पवित्र करता है, धरती पर अग्नि से मनुष्य पवित्र होता है, जीवन पवित्र होता है ।अग्नि के अभाव में सूर्य से पवित्र होता है ।सच पूछें तो अग्नि भी तो सूर्य से ही जली है, सूर्य से सब पवित्र होता है। तो सूर्य के इस भर्ग से अपनी बुद्धि को पवित्र करते हैं। यही गायत्री मंत्र का सार है।**
- **जैसे सोना खान से निकला अयस्क के रूप में, सीधे-सीधे तो लगता है मिट्टी है, कुछ है ही नहीं, किसी काम का होता भी नहीं, लेकिन जब उस अयस्क को धातु के शुद्धिकरण विधि से गुजारते हैं फिर वह चमकता हुआ सोना बन जाता है और फिर हम सभी उसे पसंद करते हैं। इसी तरह से गायत्री मंत्र जपते समय उस भगवान सूर्य से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने तेज से हमारी बुद्धि को शुद्ध करें और उस शुद्ध बुद्धि से हम अपने जीवन में इस तरह का आचरण करें।**
- **संसार सच कहिए तो क्या है? भ्रम का जंजाल है। गायत्री मंत्र कहता है- इस संसार को देखो, समझो लेकिन शुद्ध बुद्धि से देखो और समझो ।भ्रम में पड़ कर ना देखो ना समझो।**
- **आज चारों तरफ घृणा और विद्वेष का वातावरण है। ऐसा क्यों है? क्योंकि आज बुद्धि मलिन हो गई है। भक्त के मन में भगवान के प्रति अद्वितीय प्रेम होता है, अटूट भरोसा होता है। उसको फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि उसको मालूम है कोई व्यक्ति सिद्ध, समर्थ, देवी, देवता, त्रिदेव, चतुरदेव हो, सब 'समर्थ' हो सकते हैं 'सर्व समर्थ' नहीं हो सकते।**
- **एक बार भगवान पर भरोसा हुआ फिर प्रकृति की सहायताएं, परमेश्वर की कृपा ऐसी उतरती है सब काल कंटक ढह जाते हैं।**
- **भगवान, ईश्वर, शक्ति, परमेश्वर, प्रकृति दो नहीं एक है। जो दो समझता है वह समझदार नहीं है।**
- **ध्यान रखें भक्त भगवान को भूल जाए, भगवान भक्तों को नहीं भूलता ।पर भक्ति सच्ची होनी चाहिए, हर कसौटी पर कसी जाने वाली भक्ति। वाणी में भक्ति नहीं बसती है, भक्ति चित्त की चेतना में, चिंतन में**

बसती है। मन की गहराई में बसती है, मन में हिलोरें लेती है। भक्त के जीवन में भक्ति अंतर्धारा की तरह बहती रहती है। बस, भरोसा मजबूत होना चाहिए।

- जब दृढ़ विश्वास, दृढ़ भाव, दृढ़ भक्ति पैदा होती है तो सब असम्भव संभव हो जाता है। जिसका हाथ भगवती पकड़ लेती हैं उसे पार लगा ही देती हैं। कर्म-संस्कार फिर नहीं रहता है, सब विलीन हो जाता है।
- ऐसा हो ही नहीं सकता भक्त पुकारे और भगवान सुने नहीं, देर -सबेर सुनता है, हमारी इंटेंसिटी के अनुसार सुनता है, पर सुनता जरूर है। सच यह है कि इंसान के पास ईश्वर नाम के अलावा कुछ भी नहीं है। चाहे वह जितना धन- दौलत, पावर, पद इकट्ठा कर ले। यह भ्रम के सिवा कुछ नहीं है। वास्तविक बात यह है कि यह सब डर पैदा करता है, पर ईश्वर स्मरण इंसान को निडर बनता है, यह अभय ही तो भक्ति है।
- ज्ञान, पढ़ाई- लिखाई का नाम नहीं है, शुद्ध चित्त की सहज उपलब्धि है ज्ञान और शुद्ध हृदय की सहज उपलब्धि है भक्ति।
- डिजिटल दुनिया वास्तविक दुनिया से ज्यादा पीड़ा देने वाली बन गई है ।तो इस डिजिटल दुनिया से इमोशनली कनेक्ट ना हों, भावनात्मक रूप से ना जुड़ें ।
- वास्तविक दुनिया के जितने रिश्ते -नाते हैं उनसे वास्तविक रूप से मिलें- जुले तो भावनात्मक पोषण मिलेगा। मानसिक कुंठा नहीं रहेगी, दुखी -निराश नहीं रहेंगे।
- मनुष्य का विज्ञान देवों के विज्ञान के सामने खिलौना है। हमलोग पदार्थ जगत में जीते हैं, देवता ऊर्जा जगत में जीते हैं।
- अंदर का रावण क्या है? अहंकार। अहंकार सबसे डरपोक होता है, बात-बात पर अहंकार को चोट लग जाती है।
- राजनीति के हाथों में विज्ञान चला जाएगा तो परमाणु बम बन जाएगा, तथा राजनीति के हाथों में यदि धर्म चला जायगा तो दंगा हो जाएगा।

जिज्ञासा

प्रश्न: - हम जो नींद में सपना देखते हैं, वह याद कैसे रह जाता है?

उत्तर: - स्वप्न मन और चित्त की मिली- जुली भावदशा होती है। मतलब मन पर हर समय अंकुश नहीं रहता है। जागेंगे तो हम मन पर बुद्धि का अंकुश रखते हैं ।जैसे बाजार में कोई सामान अच्छा लगा या किसी के घर गए कोई सामान अच्छा लगा, तो मन में यह विचार आया कि यह सामान उठा लें। बुद्धि उसे रोकती है, नहीं! बदनामी होगी, कोई मारेगा, डांटेगा इसलिए नहीं उठाते हैं ।पर स्वप्न में ऐसा कुछ नहीं होता, मन निरंकुश, चित्त निरंकुश मनोदशा के अनुसार स्वप्न देखता है। मन में ही स्मृतियां होती है और स्मृतियों से स्वप्न होता है । स्वप्न से स्मृतियां बन जाती है, इसलिए जगने के बाद हमें याद भी रह जाता है, नहीं भी याद रहता है।

प्रश्न: - क्या सपने सच होते हैं? होते हैं तो कैसे?

उत्तर: - स्वप्न सच हो भी सकते हैं और नहीं भी हो सकते हैं ।स्वप्न सांकेतिक भाषा है, जैसे कोड लैंग्वेज होते हैं, स्वप्न भी कोड लैंग्वेज है। स्वप्न का भी एक कोड होता है। सामान्य तौर पर बोलते हैं -हाथी सपने में देखा तो राज मिलता है ,सांप देखा तो खजाना मिलता है इत्यादि- इत्यादि ।स्वप्न का अपना विज्ञान है, अगर कोई सपनों के कोड को डिकोड कर सकता है, तो समझ में आता चला जाएगा। हमारी जो बाहरी दुनिया है ,जागने वाली चैतन्य दुनिया है, उसमें हम विचार और बुद्धि की भाषा में सोचते हैं। लेकिन सपने चित्रों की भाषा में सोचता है। जैसे चीनी भाषा है, हिंदी भाषा ,अंग्रेजी भाषा है तो यह भाषा है, पर चीनी भाषा में अटपटे चित्र होते हैं ।इस तरह मन चित्रों की भाषा कहता सुनता है। मान लीजिए गोबर दिखा, कीचड़ दिखा, बादल दिखा अब इसका मतलब निकाल खोजें, यह क्या है? 90% स्वप्न तो दिन में, मन में होने वाली इच्छा जो पूरी नहीं हुई है उसे पूरा कर उस स्ट्रेस को रिलीज कर देता है ।जैसे मन हुआ दिन में हवाई जहाज पर चढ़कर कश्मीर घूमने जाते , सच्चाई में नहीं जा पाए, पर सपने में जरूर घूम आए, तो मन हल्का हो गया, सामान्य स्थिति में आ जाता है।जो दिन में सोचा पूरा नहीं हुआ, सपने में पूरा हो गया। पर चित्र में कुछ उभर सकता है, संस्कार भी हो सकता है। तो उसे समझें, फिर वह संकेत है। फिर वह सच भी हो सकता है ।यह भी होता है कुछ लोगों को,किसी को बार-बार देखे तो कुछ भी अपेक्षा है उसे आपसे ,पूरा करें। कुछ लोगों को कोई दिखा तो घर में कोई बीमार हो जाता है ।जब भी दिखा तो घर में कोई घटना घट जाती है। बुरा सपना दिखा अगर, तो कहते हैं गजेंद्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ कर लेना चाहिए, विघ्न बाधा खत्म हो जाती है।

प्रश्न: - मां -पिता के कर्म का फल उनके बच्चों को मिलता है, अगर मिलता है तो क्यों मिलता है?

उत्तर: - मां -पिता का कर्म बच्चों को इसलिए मिलता है कि हम उनके अंश हैं ।उनकी संपत्ति के ,शुभ कर्मों के हिस्सेदार अगर हैं ,तो खराब कर्म के भी हिस्सेदार हैं। उनकी रोटी खाई, उनकी संपत्ति लिए तो बुरा कर्म भी तो लेना पड़ेगा। संपत्ति ना लें ,संपदा ना लें तो फिर नहीं मिलेगा मां-बाप का कर्म या जितना खाए हैं उतना ही

मिलेगा। दशरथ जी का अच्छा कर्म था तो राम जी को मिला ।राम जी को पूरी अयोध्या का साम्राज्य मिला, जो सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था उस समय वह मिला। लेकिन एक बात ध्यान से समझें अगर पिता ने किसी की हत्या की तो बेटा जेल थोड़े ही जाएगा। हां !उनके जेल जाने से जितनी परेशानी उठानी पड़ेगी वह संतान उठाएगा।

प्रश्नः - जब हम निद्रा में रहते हैं, सोए रहते हैं तो जीवात्मा क्या करती है?

उत्तरः - जीवात्मा कभी सक्रिय नहीं होती, साक्षी होती है हमारे कर्मों की, भागीदार नहीं होती। कोई भी कर्म आत्मा को नहीं छुता ,जीवात्मा कोई कार्य नहीं करती। जो भी कर्म है ,सक्रियता है, कर्म का परिणाम है वह परमात्मा में नहीं लगता है ,आत्मा में नहीं लगता है। वह आत्मा ,परमात्मा का चूँकि नित्य सनातन अंश है ,इसलिए उसे भी नहीं लगता है। सिर्फ साक्षी है। हाँ, चित्त में जो संग्रहित होगा उसको भोगना पड़ेगा, चित्त का खेल है ,यह चित्त सक्रिय है आत्मा निष्क्रिय है। चोर की आत्मा और साधु की आत्मा एक जैसी होती है। आत्मा में कोई फर्क नहीं ,फर्क चित्त में है, मन में है। दुष्ट की आत्मा और सज्जन की आत्मा भी एक जैसी होती है। चित्त सबका अलग-अलग होता है ।जो चित्त में इकट्ठा किया, चित्त के अनुसार फिर कर्म किए, उस अनुसार फिर चित्त में नया इकट्ठा हो जाएगा ।इसलिए कोई आत्मा अच्छी या बुरी नहीं होती। आत्मा सभी अच्छी होती है। चित्त के कारण, चित्त के कर्म संस्कार के कारण डाकू या संत बनता है, सज्जन या दुर्जन बनता है, आत्मा के कारण नहीं। आत्मा प्रभावित नहीं होती, इसी कारण डाकू भी संत बन सकता है। चित्त में ही शुद्धि- अशुद्धि होती है।

प्रश्नः - मुझको को अपने आप से डर लगता है, मतलब कि हम खुद के कारण मर जाएंगे, जब हम उठते हैं, खड़े होने में डर लगता है। यह ठीक कैसे हो?

उत्तरः - आपको अपने आप से डर लगता है, मतलब आपके अंदर आत्मविश्वास की कमी है। मनुष्य भगवान का सनातन अंश है, उसके पास सामर्थ्य है ।जब आप इस तरह से समझेंगे तो आप अच्छाई की ओर निरंतर आगे बढ़ते चले जाएंगे। अपने को माने कि हम भगवान के अंश हैं, भगवान की कृपा पर, उनके आशीर्वाद पर भरोसा रखिए। जैसे-जैसे आप प्रार्थनाशील होंगे, प्रार्थना करेंगे वैसे-वैसे आपके अंदर का भय खत्म होता चला जाएगा। इसी को कहते हैं ईश्वर उन्मुख होना। यह डर क्या है? यह कुछ ना कर पाना क्या है? मनोग्रंथि है ।जब व्यक्ति निरंतर अपराध बोध में, ग्लानि में रहता है तो उसके अंदर मनोग्रंथि विकसित हो जाती हैं। फिर उसे भय लगता है। ग्लानि में, मनोग्रंथि में न फंसे। इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करिए, योग -प्राणायाम, ध्यान करिए ।अपने आप को भगवान से जोड़ें और अपने आप को भगवान का अंश महसूस करें। केवल ईश्वर की चेतना ऐसी है जो मनुष्य के सभी विकारों को दूर करती है।

प्रश्नः - राम भगवान तो केवल अपने पेरेंट्स के लिए अच्छे थे, अपनी वाइफ के लिए अच्छे नहीं थे, क्योंकि अग्नि परीक्षा से रोक नहीं पाए, हमें लगता है यह सही नहीं है। हमेशा अग्नि परीक्षा औरतों को ही क्यों देना पड़ता है?

उत्तर: - अरे! भगवान का मानवीकरण आप क्यों कर रहे हैं? एक तरफ भगवान कहते हैं, दूसरी तरफ इंसान के कर्मों जैसा निष्कर्ष निकालते हैं ।मतलब आप भगवान से भी बड़े हैं ।अरे! भगवान समझते हैं, तो भगवान के सारे कर्म क्या समझ में आते हैं आपको? कभी नहीं समझ में आएगा, हम छोटी बुद्धि वाले हैं, सीमित बुद्धि है और भगवान विराट हैं ।कैसे समझ में आएगा? छोटी सी कटोरी में सागर नहीं समा सकता। पहले क्लास का छात्र है, उसको पता है कि हमारे शिक्षक क्या कर रहे हैं? किस कारण कौन सा कार्य कर रहे हैं? गोस्वामी जी कहते हैं - लक्ष्मण जी जैसे व्यक्ति भी भगवान के मन को नहीं जान पाए ,हम- आप किस खेत की मूली हैं ?जो हमेशा भगवान के साथ ही रह रहे हैं , भगवान राम ने क्या लीला रची वह नहीं जान पाए, उस समय वे वहां नहीं थे ।राम सीता को कहते हैं -जब तक मैं निशाचारों का विनाश करूं, हे सीते !आप अग्नि में वास करो ,यानी ऊर्जा में रहो। तो मूल सीता अग्नि में समा गई, अग्नि लोक चली गई। जिस सीता का अपहरण हुआ ,वह छाया सीता थी। यह घटना लक्ष्मण जी के सामने नहीं घटी थी ,उन्हें भी यह नहीं मालूम है कि साथ में कौन सीता चल रही है ।जब स्थिति सामान्य हुई तो छाया सीता अग्नि में वापस गई मूल सीता बाहर आई। इसको नहीं समझने के कारण हम समझते हैं राम जी अपनी वाइफ के लिए अच्छे नहीं थे ।गोस्वामी जी रामचरितमानस में लिखते हैं -जब रामचंद्र जी अयोध्या वापस लौटते हैं ,तो लाखों लोगों से एक क्षण में मिल लिए, जितने लोग उतने राम ।क्या यह मनुष्य का कर्म है ,मनुष्य द्वारा यह संभव है ?जब गीता में भगवान कहते हैं - मेरा जन्म भी दिव्य है ,कर्म भी दिव्य है ।लेकिन हम आप उनको नहीं समझ सकते। इसलिए भगवान के कर्म को लीला कहते हैं। राम ,लीला कर रहे हैं ।यह सब बातें भगवान के लिए छोड़िए, क्यों किया, क्या किया?

प्रश्न: - जीवितपुत्रिका व्रत किस दिन करें? इस प्रश्न के उत्तर में एक पंडित जी ने कहा -ज्योतिष विद्या कर्म निर्णायक है, गणना निर्णायक है, भूगोल -खगोल समय का निर्णायक है, धर्म का निर्णायक नहीं है। इसका क्या अर्थ है?

उत्तर: - ज्योतिष कर्म निर्णायक है, धर्म निर्णायक नहीं है यह बात सही है। लेकिन धर्म का निर्धारण कर्म ही करता है ना ।कौन व्यक्ति धर्मात्मा है, कौन व्यक्ति धर्मात्मा नहीं है, यह निर्धारण करता है उनका कर्म ।कर्म से व्यक्ति सत्पुरुष होता है, कर्म से व्यक्ति धर्मात्मा होता है या दुरात्मा होता है ।ज्योतिष यह निर्धारण करता है कि अपने कर्मों से धर्मात्मा बनेगा या नहीं। हां! एक बात यह भी समझें कि धर्म सिर्फ पूजा -पाठ नहीं है ।धर्म का मतलब प्रकृति के अनुरूप आचरण, परमात्मा की ओर उन्मुख जीवन। धर्मात्मा व्यक्ति पूजा -पाठ कर भी सकता है ,नहीं भी कर सकता है ,लेकिन धर्मात्मा है, क्योंकि वह प्रकृति की मर्यादा का पालन करता है ।दृश्य में पूजा नहीं करता ,लेकिन मन से परमात्मा का चिंतन मनन करता है। पंडित जी के कथन से यह लगता है -वह कहना चाह रहे हैं ज्योतिष यह निर्णय नहीं ले सकता किस दिन जीवितपुत्रिका व्रत करना है ,यह धर्मशास्त्र निर्णय करेगा। पर हम कहना चाहेंगे - यह निर्णय ज्योतिष शास्त्र ही ले सकता है,कौन व्रत ,कौन पर्व कब करना चाहिए? इसके समय का निर्धारण तो पंचांग देख कर ज्योतिष ही करता है। काल का निर्धारण तो ज्योतिष करेगा। अष्टमी तिथि में तीन पूजा होती है- जन्माष्टमी, लक्ष्मी पूजा और जीवितपुत्रिका ।लक्ष्मी जी की पूजा और कृष्ण जी

का जन्म अष्टमी में होता है रात को। चंद्रोदय तिथि ली जाती है, लेकिन जीवित वाहन यानी गरुड़ जी का सूर्योदय तिथि ली जाती है, सूर्य व्यापिनी तिथि है उसकी मान्यता है ।यह निर्धारण तो ज्योतिष ही करेगा। पूजा पद्धति धर्मशास्त्र बताएगा ,पूजा पाठ कैसे करें ?यह धर्मशास्त्र बताएगा। कब करें? यह ज्योतिष शास्त्र बताएगा।

प्रश्नः - हम कितना भी लोगों के बीच बोलने की सोचते हैं परंतु बोल नहीं पाते हैं। मन में अच्छी तरह सोच लेते हैं कि क्या बोलना है लेकिन बोल ही नहीं पाते क्या करें?

उत्तरः - कारण क्या है? झिझक, संकोच, अभ्यास की कमी। प्रैक्टिस नहीं है ना, अभ्यास की कमी है इसीलिए बोल नहीं पाते। देखिए प्रैक्टिस कैसे करिए? आईना के सामने खड़े हो जाइए और जो मन में आए सो बोलिए, अभ्यास कीजिए, बोलते रहिए कंटीन्यू ।इस तरह से अभ्यास करिएगा न फिर संकोच और झिझक महसूस नहीं होगा। मान लीजिए कहीं आपको कुछ बोलना है, अच्छी तरह सोच लीजिए ,लेकिन तब तक कुछ और मत सोचिए, केवल उसीको सोचते रहिए। तो कहने का मतलब है और कुछ मत सोचिए जब तक आप बोल नहीं लेते। कुछ महीने में फिर बोलने का तनाव भी नहीं रहेगा और ना बोलने का भी तनाव नहीं रहेगा। दो बातें हैं इस तरह से अभ्यास करेंगे तो कुछ बोलने का भी तनाव ना रहेगा और नहीं कुछ बोलने का तनाव रहेगा। बोलने के लिए भरोसा होना चाहिए, आत्मविश्वास होना चाहिए।जो बोलना चाहते हैं वह टू द पॉइंट, साफ सुथरा होना चाहिए और जो आप बोलने जा रहे हैं उस पर आपको भरोसा होना चाहिए। जब भरोसा हो जाएगा, अपने ऊपर, अपने ज्ञान के ऊपर, अपनी जानकारी के ऊपर फिर तो कोई दिक्कत ही नहीं है। दूसरी बात जो आप बोलने वाले हो या बोल चुके हो उसके बारे में आपको मालूम होना चाहिए, उसका सूक्ष्म तथ्य। लेकिन आपको यदि अपने ज्ञान पर खुद ही भरोसा नहीं है तो आप कुछ नहीं बोल पाएंगे ,खुद ही इसकी चाहत है तो आप बोल पाएंगे, भरोसा नहीं है तो आप हिचकिचा जाएंगे। इसके लिए क्या करना होगा? तो सबसे पहले प्राणायाम कीजिए, प्राणबल को बढ़ाइए, ध्यान करिए, योगासन करिए, प्रातः काल जागिए, गायत्री मंत्र का जाप करिए और लगातार अभ्यास से आपका डर निकल जाएगा समझे ना। आप अपने डर को निकाल सकते हैं भागिए मत सामना कीजिए ।

अक्टूबर माह की गतिविधियाँ

जरूरतमंदों के लिए भोजन की तैयारी करती हुए महिला मण्डल

प्रतिदिन सदर अस्पताल सहरसा में 1:00 से 2:00 बजे के बीच गायत्री परिवार, सहरसा के युवा मंडल के भाइयों द्वारा जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद वितरण

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में शिवाभिषेक करते हुए श्रद्धालुगण

अक्टूबर माह की मासिक बैठक को संबोधित करते डॉ0 अरुण कुमार जायसवाल। इस बैठक में ट्रस्टी, मंदिर कार्यकारिणी समिति के सदस्य, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा समिति के सदस्य, युवा मंडल, युवती मंडल महिला मंडल, प्रज्ञा मंडल सहित सक्रिय परिजन शामिल हुए। इस बैठक में शक्तिपीठ की व्यवस्था से संबंधित विषयों पर चर्चा हुई।

दिनांक 1.10.2023 (रविवार) को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को सम्बोधित करते हुए डा0 अरूण कुमार जायसवाल जी ने कहा गायत्री मंत्र सद्‌बुद्धि का मंत्र है। बुद्धि को शुद्ध करने का मंत्र है। यहाँ लोग व्यक्ति बनकर आते हैं, और व्यक्तित्व लेकर जाते हैं। पर्सन बनके आते है पर्सनालिटी लेके जाते है। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिमार्जन करना है।

दिनांक-8.10.23 रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को सम्बोधित करते हुए डा0 अरूण कुमार जायसवाल ने कहा- शक्ति या उर्जा का आप क्या करते हैं? सदुपयोग या दुरूपयोग? उन्होंने कहा-जीवन बहुआयामी है। हमलोग एक ही डायमेंशन में न जीएँ। सोचने की सीमा को थोड़ा बड़ा करें। मानवता की गरिमा का हमेशा ख्याल रखें। हम सब एक हैं, एक दूसरे से अखंड रूप से जुड़े हुए हैं। परमेश्वर सब में समाया हुआ है।आत्मा के स्तर पर चिंतन करेंगें तो सभी भेद-भाव मिट जाएगा।

सर्व पितृ अमावस्या पर श्राद्ध–तर्पण एवं पिण्डदान

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में नवरात्रि अनुष्ठान के प्रथम दिन कलश स्थापना एवं आदि शक्ति की प्रथम रूप मां शैलपुत्री का विशेष पूजन हुआ। इस अवसर पर डा0 अरुण कुमार जायसवाल जी ने नवरात्री अनुष्ठान के महत्व को बताते हुए कहा-सभी शक्ति साधक के लिए बड़ा ही अनुपम दिन है। इन नौ दिनों में हम जगन्नमाता की गोद में रह कर जीवन का पुनर्निर्माण करते हैं।

पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देवकान्या-मनीषा, मधु तथा रश्मि ने कराया। पूजन एवं कलश स्थापन का कार्य मुख्य यजमान आनंद चेतन व उनकी धर्मपत्नी ने किया। साथ में भूतपूर्व जिला जज किशोर कुमार जी स परिवार उपस्थित थे। लगभग 500 से अधिक परिजन ने 24,000 गायत्री मंत्र के जप का संकल्प लिया।

नवरात्रि के प्रथम दिन गंगाजल एवं देवस्थपना का सामूहिक रूप से पूजन करते श्रद्धालुगण।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा में नवरात्रि के तीसरे दिन मां भगवती के तृतीय रूप श्री चंद्रघंटा देवी का पूजन करते श्रद्धालुगण।

दिनांक 18.10.2023 बुधवार को गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के उपासना कक्ष में नवरात्रि साधना की पूर्णाहुति की व्यवस्था के लिए आयोजित बैठक में शामिल साधकगण

नव दुर्गा के पंचम रूप स्कंद माता का पूजन कराती गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा की देव कन्याएं

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा के उपासना कक्ष में नव दुर्गा के पूजन बाद विद्यारंभ, पुंसवन, अन्नप्राशण, दीक्षा संस्कार आदि विभिन्न संस्कार संपन्न कराए गए

विद्यारंभ संस्कार

पुंसवन संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार

दीक्षा संस्कार

नवरात्रि के पूर्णाहुति के दिन बड़ी संख्या में पूजन हेतु गायत्री शक्ति पीठ सहरसा में शामिल श्रद्धालु

आदि शक्ति के नवम स्वरूप मां सिद्धि दात्री का पूजन करती हुई देवकन्याएँ। पूजन के क्रम में डा० अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा - आज का दिन साधना से सिद्धि को प्राप्त करने का दिन है। जीवन की पूर्णता का दिन है।

मां सिद्धिदात्री का विशेष पूजन करती देव कन्याएं मनीषा, मधु और श्रुति।

माँ सिद्धिदात्री का पूजन करते भक्तगण

नवरात्रि में प्रतिदिन शाम के कार्यक्रम में देवी माँ की आरती, चालीसा, मातृवंदना, गुरुवंदना, प्रज्ञा गीत, संगीतमय रामकथा, राम चरित मानस के अनछुए प्रसंग के अन्तर्गत किष्किन्धा कांड के चार गुफा यानि मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार (अंतःकरण चाटुश्य) की तत्वकथा का क्रम चला

श्रद्धालुओं की लंबी क़तार

कुमारी कन्या भोजन

पूर्णाहुति यज्ञ का संचलन करती देव कन्यायें

पुष्पांजलि की क़तार

पूर्णाहुति करते याजकगण

भोजन प्रसाद (अमृतासन) वितरित करती महिला मण्डल

जूता चप्पल स्टाल पर कार्यरत युवा मण्डल

अमृतासन ग्रहण करते श्रद्धालु एवं कार्यकर्तागण

ज्ञान प्रसाद और पूजन सामग्री स्टाल

शारदीय नवरात्रि का प्रथम दिवस

और चरम दिवस.....🙏

श्रद्धालुओं का पंजीयन कर उन्हे Whats app Group में जोड़ते व अखंडज्योति पत्रिका देते युवागण

वाहनों को मैदान में लगवाते कार्यकर्तागण

गायत्री कम्प्युटर संस्थान के इस सत्र का समापन परीक्षा देते विद्यार्थीगण

2 अक्टूबर को गांधी जयंती एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में बाल संस्कार शालाओं के बच्चों के द्वारा श्रद्धांजलि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

साथ ही इस अवसर पर संस्कारशाला के बच्चों द्वारा वृक्षारोपण का कार्यक्रम; आचार्य एवं बच्चों का सामुहिक चित्र

पिछले 11 साल से चले आ रहे ...दिनांक 29/10/2023(रविवार) को प्रत्येक महीना के अंतिम रविवार की तरह सहरसा जिला के सोनवर्षा प्रखंड अंतर्गत शाहपुर में गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा 24 अलग- अलग घरों में गायत्री यज्ञ, देव स्थापना, पौधा रोपण कार्यक्रम संपन्न। साथ ही दीवार लेखन कर गुरुदेव के विचारों को जन- जन तक पहुंचाने का सफल प्रयास।

दैनिक समाचार पत्रों में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

गायत्री मंदिर में आदि शक्ति मां सिद्धि दात्री के पूजन स्तवन के साथ हुआ समापन

मीडिया दर्शन/सहरसा। विगत नौ दिनों से चली आ रही शारदीय नवरात्र अनुष्ठान का समापन आदि शक्ति मां सिद्धि दात्री के पूजन स्तवन के साथ समापन हुआ।नौ दिनों से साधक ने 24 हजार गायत्री मंत्र जप का अनुष्ठान हवन-पूजन करते हुए पूर्णाहुति दी तथा अमृतासन प्रसाद ग्रहण किए।सर्वप्रथम आदि शक्ति के नवम स्वरूप मां सिद्धि दात्री का पूजन हुआ।पूजन के क्रम में डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा साधना उपासना के अवरोध और विघ्न खत्म करने के लिए साधना,स्वाध्याय,भगवान के प्रति उन्मुख रखते हैं तो कोई न कोई उपाय भगवान कर हीं देते हैं।आपका भगवान के प्रति विश्वास कितना है।आपका भक्ति,साधना, उपासना,प्रार्थना कितना दृढ है।भक्त,भक्ति,भगवान तीनों की परीक्षा होती है।भगवान कितना भक्त वत्सल हैं।भगवान की ओर उन्मुख हैं तो सभी परीक्षा में पास हो जाएंगे।अवरोध आएगा तो भगवान कोई न कोई रास्ता निकालेंगे।माता सिद्धिदात्री का पूजन मतलब साधना का नवमा चरण।यानी साधना की सम्पूर्णता। सिद्धि यानी मोक्ष को देनेवाली।साधक कैवल्य ज्ञान व मोक्ष के अधिकारी हो जाते हैं।यज्ञशाला में साधक को हवन-पूजन करवाने में शक्तिपीठ की देवकन्या मनीषा मधु,दीप्ती रूही,कोमल,तथा भारती थी।वही अमृतासन प्रसाद वितरण में शक्तिपीठ की महिला मंडल एवं युवा मंडल थे।इस अवसर पर लगभग 3000 से अधिक परिजनों ने हवन-पूजन कर प्रसाद ग्रहण किया।

दैनिक भास्कर सहरसा 16-10-2023

आस्था • गायत्री शक्तिपीठ में नवरात्र अनुष्ठान के पहले दिन कलश स्थापन व आदि शक्ति के प्रथम रूप की पूजा

नवरात्र अनुष्ठान शक्ति साधकों के लिए अनुपम अवसर

भास्कर न्यूज | सहरसा

स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को नवरात्र अनुष्ठान के प्रथम दिन कलश स्थापना एवं आदि शक्ति की प्रथम रूप मां शैलपुत्री का विशिष्ट पूजन हुआ । इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने अनुष्ठान के महत्व को बताते हुए कहा कि सभी शक्ति साधक के लिए बड़ा ही अनुपम अवसर है।इन नौ दिनों में हम जगन्नमाता की गोद में रहने की भाव करें।हृदय की संवेदना सबसे पहले मां की खोज करती है।मां से ही जन्म जीवन मिलता है।

संवेदना की समूची जीवन शक्ति मां की कोख से जन्म लेती है।हम सब मांओं की मां को भूल चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस भाव से हम नौ दिनों तक अपने जीवन का पुनर्निर्माण करें। स्मरण, नमन, पूजन, अर्चन मां की याद में करते रहें।

नवरात्र अनुष्ठान के लिए विधि-विधान से कलश स्थापित किया गया।पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देवकन्या मनीषा, मधु तथा रश्मि ने करवाई। पूजन एवं कलश स्थापन का मुख्य यजमान पत्नी सहित आनंद चेतन थे। इस अवसर पर 500 से अधिक परिजनों ने 24,000 गायत्री मंत्र जाप के अनुष्ठान का संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में गंगाजल एवं देवस्थापन का सामूहिक रूप से पूजन हुआ।गंगाजल एवं देवस्थापन का मुख्य उद्देश्य के संबंध में बताया गया कि नवयुग की ज्ञान गंगोत्री हर घर पहुंचे,जिससे निराश मानवता में नव प्राण का संचार हो।

शनिवार को गायत्री शक्तिपीठ में आयोजित अनुष्ठान में भाग लेते श्रद्धालु।

संबोधित करते डॉ अरुण जायसवाल।

गायत्री शक्तिपीठ में प्रथम रूप मां शैलपुत्री की हुई विशिष्ट पूजा

अनुष्ठान का महत्व बताते डॉ अरूण .

कार्यक्रम में मौजूद श्रद्धालु .

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में नवरात्र अनुष्ठान के प्रथम दिन रविवार को कलश स्थापना व आदि शक्ति की प्रथम रूप मां शैलपुत्री का विशिष्ट पूजन हुआ . इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने नवरात्र अनुष्ठान के महत्व को बताते कहा कि यह सभी शक्ति साधक के लिए बड़ा ही अनुपम अवसर है . इन नौ दिनों में हम जगन्नमाता की गोद में रहने की भाव करें . हृदय की संवेदना सबसे पहले मां की खोज करती है . मां से ही जन्म जीवन मिलती है . संवेदना की समूची जीवन शक्ति मां की कोख से जन्म लेती है . हम सब मांओं की मां को भूल चुके हैं . इस भाव से हम नौ दिनों तक अपने जीवन का पुनर्निर्माण करें . स्मरण, नमन, पूजन, अर्चन मां की याद में करते रहें . नवरात्र अनुष्ठान के लिए विधि-विधान से कलश स्थापित किया गया . पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देवकान्या मनीषा, मधु एवं रश्मि ने करायी . पूजन एवं कलश स्थापन का मुख्य यजमान आनंद चेतन सपत्नी थे . लगभग 500 से अधिक परिजन 24 हजार गायत्री मंत्र जाप के अनुष्ठान संकल्प लिया एवं अंत में गंगाजल देवस्थापन का सामूहिक रूप से पूजन हुआ . गंगाजल एवं देवस्थापन का मुख्य उद्देश्य नवयुग की ज्ञान गंगोत्री हर घर पहुंचे, जिससे निराश मानवता में नव प्राण का संचार हो .

शक्तिपीठ में मां शैलपुत्री का हुआ विशिष्ट पूजन

सहरसा । गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में नवरात्र अनुष्ठान के प्रथम दिन कलश स्थापना एवं आदि शक्ति की प्रथम रूप मां शैलपुत्री का विशिष्ट पूजन हुआ ।

इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने नवरात्र अनुष्ठान के महत्त्व को बताते हुए कहा-सभी शक्ति साधक के लिए बड़ा ही अनुपम अवसर है।इन नौ दिनों में हम जगन्नमाता की गोद में रहने की भाव करें।हृदय की संवेदना सबसे पहले मां की खोज करती है।मां से हीं जन्म जीवन मिलती है।संवेदना की समूची जीवन शक्ति मां की कोख से जन्म लेती है।हम सब मांओं की मां को भूल चुके हैं।

इस भाव से हम नौ दिनों तक अपने जीवन का पुनर्निर्माण करें।स्मरण, नमन,पूजन, अर्चन मां की याद में करते रहें।नवरात्र अनुष्ठान के लिए विधि-विधान से कलश स्थापित किया गया।

पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देवकान्या-मनीषा,मधु तथा रश्मि ने करवाई। पूजन एवं कलश स्थापन का मुख्य यजमान आनंद चेतन स पत्नी थे। लगभग 500 से अधिक परिजन 24,000 गायत्री मंत्र जाप के अनुष्ठान का संकल्प लिए। तथा अंत में गंगाजल एवं देवस्थापन का सामूहिक रूप से पूजन हुआ।गंगाजल एवं देवस्थापन का मुख्य उद्देश्य नवयुग की ज्ञान गंगोत्री हरघर पहुंचे,जिससे निराश मानवता में नव प्राण का संचार हो।

तुलसियाही में निकली कलश यात्रा

सत्तर कटैया। तुलसियाही में दुर्गापूजा के अवसर पर कलश यात्रा निकाली गई। गाजेबाजे के साथ निकली कलश यात्रा में गांव की 251 किशोरी कन्याओं ने भाग लेते हुये धेमरा नदी में जल भरकर लालगंज, बारा, रहुआ होते हुये नव दुर्गास्थान तुलसियाही पहुंचा। मां दुर्गा के जयकारे से माहौल भक्तिमय बना हुआ था। कलश यात्रा को सफल बनाने में स्थानीय ग्रामीण जुटे हुये थे। कलश यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं, कन्याएं और स्थानीय लोग व जनप्रतिनिधि शामिल हुए।

गायत्री शक्तिपीठ में मां की तस्वीर लेकर संकल्प लेते श्रद्धालु • जागरण

गायत्री शक्तिपीठ में हुआ विशेष पूजन, 24,000 गायत्री मंत्र जाप का लिया गया संकल्प

गायत्री शकिलपीठ में नवरात्र अनुष्ठान के प्रथम दिन कलश स्थापना एवं आदि शक्ति की प्रथम रूप मां शैलपुत्री का विशिष्ट पूजन हुआ। इस अवसर पर डा. अरुण कुमार जायसवाल ने नवरात्र अनुष्ठान के महत्व को बताते हुए कहा कि सभी शक्ति साधक के लिए बड़ा ही अनुपम अवसर है। इन नौ दिनों में हम जगन्नमाता की गोद में रहने की भाव करें। ह्रदय की संवेदना सबसे पहले मां की खोज करती है। मां से हीं जन्म जीवन मिलती है। संवेदना की समूची जीवन शक्ति मां की कोख से जन्म लेती है। हम सब मांओं की मां को भूल चुके हैं। इस भाव से हम नौ दिनों तक अपने जीवन का पुनर्निर्माण करें। स्मरण, नमन,पूजन, अर्चन मां की याद मे करते रहें। नवरात्र अनुष्ठान के लिए विधि-विधान से कलश स्थापित किया गया। पूजन का कर्मकांड शक्तिपीठ की देवकन्याएं मनीषा, मधु तथा रश्मि ने करवाई। पूजन एवं कलश स्थापन का मुख्य यजमान आनंद चेतन सपत्नी थे। लगभग 500 से अधिक परिजन 24,000 गायत्री मंत्र जाप के अनुष्ठान का संकल्प लिए। अंत में गंगाजल एवं देवस्थापन का सामूहिक रूप से पूजन हुआ।

तपस्या से महागौर वर्ण प्राप्त कर दुर्गा कहलाईं महागौरी

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में नवदुर्गा के आठवें स्वरूप माता महागौरी का विशेष पूजन किया गया। इस अवसर पर ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने माता महागौरी की विशेषता बताते हुए कहा कि माता गौरी तपस्या द्वारा महान गौर वर्ण प्राप्त किया। इसलिए वो महागौरी कहलाईं। तप से शुद्ध प्रकाशित चेतना जब भगवती महागौरी के रूप में हमारे जीवन में आती है तो चित्त स्फटिक की तरह निर्मल हो जाता है।

आज का महागौरी का ध्यान सहस्त्रहार चक्र में केंद्रित किया गया, जिससे आनंद की ओर ऊर्जा का गमन होगा और समस्त नकारात्मकता की ऊर्जा खत्म होगी, सिर्फ आनंद की ऊर्जा बचेगी। दूसरे सत्र में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमलोग भक्ति कर रहे हैं। भक्त के हृदय में भगवान के प्रति अद्वितीय प्रेम होता है ,अटूट भरोसा होता है तभी भक्ति घटित होता है। यदि हम सर्वसमर्थ की आराधना करते हैं ,तब उसे प्रकृति की सहायता अपने आप मिलती है। मां गौरी का पूजन शक्तिपीठ की देवकन्याओं ने की ,तथा मुख्य यजमान के रूप आनंद चेतन सपत्नी भाग लिया।

पूजन कर्म पूरा करती देवकन्याएं • जागरण

हवन के साथ शक्तिपीठ में संपन्न हुआ नवरात्र का अनुष्ठान

संस, सहरसा: नौ दिनों से चली आ रही नवरात्र अनुष्ठान का समापन सोमवार को आदि शक्ति मां सिद्धी दात्री के पूजन स्तवन के साथ हो गया। नौ दिनों से साधकों ने 24 हजार गायत्री मंत्र जप अनुष्ठान का नवमीं के दिन हवन-पूजन करते हुए पूर्णाहुति दी। तथा अमृतासन प्रसाद ग्रहण किया।

सर्वप्रथम आदि शक्ति के नवम स्वरूप मां सिद्धी दात्री का पूजन हुआ। पूजन के क्रम में डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि साधना उपासना के अवरोध और विघ्न खत्म करने के लिए साधना,स्वाध्याय, भगवान के प्रति उन्मुख रखते हैं, तो कोई न कोई उपाय भगवान कर हीं देते हैं। आपका भगवान के प्रति विश्वास कितना है। आपका भक्ति, साधना, उपासना, प्रार्थना कितना दृढ है। भक्त, भक्ति,भगवान तीनों की परीक्षा होती है। कहा कि भगवान की ओर उन्मुख हैं तो सभी परीक्षा में पास हो जाएंगे। अवरोध आएगा तो भगवान कोई- न -कोई रास्ता निकालेंगे। माता सिद्धिदात्री का पूजन मतलब साधना का नवमा चरण। यानि साधना की सम्पूर्णता। सिद्धि यानि मोक्ष को देनेवाली। साधक केवल ज्ञान,मोक्ष के अधिकारी हो जाते हैं।

यज्ञशाला में साधक को हवन-पूजन करवाने में शक्तिपीठ की देवकन्या, मनीषा, मधु, दीप्ती रूही, कोमल व भारती थी। तथा अमृतासन प्रसाद वितरण में शक्तिपीठ की महिला मंडल एवं युवा मंडल के सदस्यों ने सराहनीय भूमिका अदा कियाथ। इस मौके पर 3000 से अधिक परिजनों हवन-पूजन किया एवं प्रसाद ग्रहण किया।

पूजन कर्म कराती देवकन्याएं • जागरण

कटि स्नान से लाभ

1. छोटी व बड़ी आंत के अधिकांशतः सभी रोग कटि स्नान से दूर हो जाते हैं |

2. पेडू की अतिरिक्त गर्मी के फलस्वरूप मल में जो स्वाभाविक नमी होती है, वह सूख जाती है जिसके कारण मल आंत में सूखकर कड़ा हो जाता है, इसी अवस्था को जीर्ण कब्ज या कोष्ठबद्धता कहते हैं | कटि स्नान से पेट की अतिरिक्त गर्मी पानी में निकल जाती है एवं कब्ज से मुक्ति मिलती है |

3. दर्द रहित पेडू की पुरानी सूजन में विशेष लाभकारी है |

4. पीलिया रोग में स्टीम बाथ के तुरंत बाद २-३ मिनट कटि स्नान करने के उपरांत पूर्ण स्नान करने से पित्त पर्याप्त मात्रा में निकलता है एवं पीलिया समाप्त हो जाता है |

5. नये एक्जिमा में कटि स्नान अत्यंत लाभकारी है |

6. नियमित कटि स्नान करने से शरीर की जीवनीशक्ति आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है जिससे कैंसर, लकवा, क्षय जैसे भयंकर रोगों से बचाव होता है |

7. बवासीर, आंत, गर्भाशय की रक्तस्राव की अवस्था में कटि स्नान अत्यंत हितकारी है | इस क्रिया को करने से पेडू में स्थित अतिरिक्त रक्त पैरों में उतर जाता है तथा पानी की ठंडक से पेडू सिकुड़ने लगता है, फलस्वरूप रक्तस्राव बंद हो जाता है |

8. अनिद्रा, हिस्टीरिया, चिड़चिड़ापन, स्नायुविक रोगों में कटि स्नान अति लाभप्रद है |

माह अक्टूबर में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) एवं नवरात्रि साधना में भाग लिया -

- श्री किशोर प्रसाद (सेवानिवृत्त जिला जज पूर्णियां) - नवरात्रि साधना, रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं प्राकृतिक चिकित्सा के लिए

- श्रीमती अर्चना गुप्ता (धर्मपत्नी जिला जज) - नवरात्रि साधना, रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं प्राकृतिक चिकित्सा के लिए

- सुश्री अकांक्षा प्रसाद (पुत्री जिला जज) - नवरात्रि साधना, रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं प्राकृतिक चिकित्सा के लिए

- श्री ज्योति कुमार (एडीएम सहरसा)-नवरात्रि साधना के संध्या कालीन भजन एवं सत्संग में भाग लेने हेतु आगमन

आगामी कार्यक्रम

- **5 नवंबर को गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के इस सत्र के शिक्षार्थी का दीक्षांत समारोह एवं प्रथम, द्वितीय, तृतीय को पुरस्कार में लैपटॉप का वितरण तथा नए सत्र के शिक्षार्थी का ज्ञान दीक्षा समारोह**
- **12 नवंबर को दीपावली पर्व का नियोजन**
- **छठ पर्व के अवसर पर गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका का वितरण...**

भाव पथ

हे आत्मा! हमारी आत्मा, उसकी आत्मा, सबकी आत्मा
परिवार की आत्मा, समाज की आत्मा, राष्ट्र की आत्मा,
विश्व की आत्मा, हे आत्मा! तू कितनी सुन्दर है ।।
मेरी अखण्ड ज्योति तुम, उसकी अखण्ड ज्योति तुम
राष्ट्र की अखण्ड ज्योति तुम, विश्व की अखण्ड ज्योति तुम
हे अखण्ड ज्योति! तुम कितनी सुन्दर है ।।
तू ही अखण्ड एकरस है, तू ही पूर्णता की सूचक है
तू ही भक्ति का मूल मन्त्र है, तू ही ज्ञान की परम ज्योति है.
हे परम ज्योति! तू कितनी सुन्दर है ।।
तू ही दुर्गा है, तू ही काली है, तू ही लक्ष्मी है, तू ही सरस्वती है
तू ही गायत्री है, तू ही सावित्री है, तू ही देवी के समस्त रूप है
हे परात्परा परब्रह्म परमेश्वरी! तू कितनी सुन्दर है ।।
तू ही शिव है, सदाशिव तू है, तू ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश तू है
तू ही समस्त देव-अवतार है, तू ही ऋषि-मुनि, गणेश तू है
हे परात्पर परब्रह्म परमेश्वर तू कितनी सुन्दर है ।।
हृदय में वास करती तू है, दिनकर, दिवाकर बनती तू है
सूर्य का दिव्य प्रकाश तू है, साकार भास्कर तू ही तो है
हे निराकार ज्योतिर्लिंगस्वरूपिणी! तुम कितनी सुन्दर है ।।
अज्ञान, आसक्ति के आवरण ने, तुमको रखा है ढँककर
खुल जाए मनुज के प्रज्ञा चक्षु, ऐसा कुछ तू कर
हे समस्त जगत्प्रकाशिका आत्मा! तू कितनी सुन्दर है ।।
नमन-वन्दन तेरा ही है, स्मरण-मनन तेरा ही है
चिन्तन-मन्थन से, ध्यान से, खुद को प्रकट करती तू है
हे सत्य-सनातनी-चिरन्तन आत्मा! तू कितनी सुन्दर है ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA**
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/